विचार बिन्दु

दोष निकालना सुगम है, उसे अच्छा करना कठिन। –प्लूटार्क

लेखन, मानदेय और एक पुस्तक-विहीन समाज का खतरा

कुछ दिन पहले एक रोचक संवाद हुआ। यद्यपि यह बातचीत बहुत निजी और पारिवारिक वातावरण में हुई थी, मुझे लगा कि इसमें उठे प्रश्न व्यापक चर्चा के योग्य हैं। इसलिए इस संवाद की चर्चा यहां कर रहा हूं।

यह संवाद मेरी पौत्री और मेरे बीच हुआ। वह कई वर्षों से ऑस्ट्रेलिया में रह रही है। उसकी अधिकांश शिक्षा वहीं हुई और अब वह वहीं काम भी कर रही है। लेखन में उसकी गहरी रुचि है। उसकी कुछ कविताएँ वहाँ प्रकाशित हो चुकी हैं और वह वहां के विभिन्न प्रकाशनों के लिए नियमित रूप से लिखती भी है। पिछली मुलाकात में उसने सहज ढंग से बताया कि ऑस्ट्रेलिया में केवल लेखन के आधार पर भी सम्मानजनक जीवन जीना संभव है। यह हुई पृष्ठभूमि।

हाल ही में मैंने उसकी एक कविता पढी। मुझे वह बहुत अच्छी लगी और मुझे लगा कि उसे भारत की किसी प्रमुख काव्य पत्रिका में प्रकाशित होना चाहिए। संयोग से उस पत्रिका के संपादक से मेरी आत्मीयता है, लेकिन मैं उस परिचय का दुरुपयोग नहीं करना चाहता था। इसलिए मैंने उन्हें कविता केवल उनकी राय जानने के लिए भेज दी। उन्हें भी वह कविता पसंद आई और उन्होंने स्वयं ही यह प्रस्ताव रखा कि वे इस युवा कवयित्री की कुछ कविताएँ प्रकाशित करना चाहेंगे। स्वाभाविक है, इससे मुझे गर्व का अनुभव हुआ। जब मैंने यह बात अपनी पौत्री को बताई तो वह भी प्रसन्न हुई। लेकिन तभी उसने एक प्रश्न पूछा जिसने मुझे थोडा चौंका दिया। उसने पूछा–क्या वह पत्रिका पेड (Paid) है?

चूँकि वह भारत के प्रकाशन जगत के तौर-तरीकों से परिचित नहीं है, मैंने उसे कुछ बातें समझाने की कोशिश की। मैंने बताया कि भारत में अधिकांश साहित्यिक पत्रिकाएँ अपने रचनाकारों को कोई मानदेय नहीं देतीं। साथ ही, सामान्यत: लेखक भी अपनी रचना प्रकाशित कराने के लिए प्रकाशक को पैसे नहीं देते। साहित्य छापने वाली अधिकांश पत्रिकाएँ लघु पत्रिकाएँ होती हैं जिनकी प्रसार संख्या सीमित होती है। कई बार तो वे नि:शुल्क ही वितरित की जाती हैं। हाल के वर्षों में डाक-व्यय बढ़ जाने से उन्हें भेजना भी कठिन होता जा रहा है। मैंने यह भी बताया कि बडी प्रसार संख्या वाली पत्रिकाओं में साहित्य के लिए बहुत कम स्थान होता है।

मैंने उससे यह भी कहा कि भारत में साहित्य-लेखन प्राय:स्वांत:सुखाय होता है। लेखक अपनी आजीविका के लिए नौकरी या किसी अन्य पेशे पर निर्भर रहते हैं। यह भी बताया कि कुछ पत्रिकाएँ–विशेषकर शोध से जुडी-लेखकों से पैसे लेकर लेख प्रकाशित करती हैं। कभी-कभी कुछ साहित्यिक पत्रिकाएँ भी परोक्ष रूप से लेखक से पैसा माँगती हैं, लेकिन यह बात अधिक समय तक छिपी नहीं रहती और ऐसी पत्रिकाओं तथा उनमें प्रकाशित होने वाले लेखकों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता।

बात आगे बढी तो पुस्तक-प्रकाशन की स्थिति पर भी चर्चा हुई। मैंने बताया कि भारत में--विशेषकर हिंदी में-साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन तो बहुत होता है, लेकिन लेखक को उसके श्रम का पर्याप्त प्रतिफल शायद ही मिलता है। प्रकाशकों का कहना होता है कि साहित्यिक पुस्तकें बहुत कम बिकती हैं, इसलिए वे रॉयल्टी नहीं दे पाते। कई बार लेखक स्वयं अपने पैसे से भी पुस्तकें प्रकाशित कराते हैं। आजकल हिंदी प्रकाशन में यह तरीका काफ़ी सामान्य हो गया है। कुछ स्थापित और प्रसिद्ध लेखक अपने लेखन से कुछ आय प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन अधिकांश लेखक अपनी जीविका के लिए अन्य साधनों पर निर्भर रहते हैं और लेखन को मुख्यत: अपने जुनून के रूप में निभाते हैं। और भी बहुत कुछ कहा जा सकता था, लेकिन मुझे लगा कि इस संवाद के लिए इतना पर्याप्त है।

मेरी पौत्री ने मेरी बातें ध्यान से सुनीं और फिर शांत स्वर में कहा कि सिद्धांतत: वह भी मानती है कि लेखन भीतर की प्रेरणा से होना चाहिए, न कि केवल लाभ की अपेक्षा से। लेकिन जीवन केवल सिद्धांतों से नहीं चलता। यदि कोई व्यक्ति पूरे मन से लिखे और बदले में उसे कुछ भी न मिले, तो वह अपना जीवन कैसे चलाएगा? वह खाएगा क्या, रहेगा कहाँ, पहनेगा क्या? आखिर हर व्यक्ति को भोजन, आवास और वस्त्र की आवश्यकता तो होती ही है।

बहुत-सी ऑनलाइन सामग्री निःशुल्क पढ़ी जा सकती है, लेकिन प्रिंट पत्रिकाएँ सामान्यतः खरीदकर ही पढ़ी जाती हैं। कुछ डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म प्रतिदिन सीमित संख्या में लेख निःशुल्क पढ़ने देते हैं, उसके बाद उन्हें भुगतान करना पड़ता है। कथेतर लेखन और कथा साहित्य के लिए भी अलग-अलग व्यवस्थाएँ होती हैं। लेकिन कुल मिलाकर स्थिति यह है कि वहाँ बिना भुगतान के लिखना लगभग असामान्य माना जाता है।

भारतीय व्यवस्था में इसका उत्तर स्पष्ट है–जीविका के लिए नौकरी या व्यवसाय करो और मन की संतुष्टि के लिए लिखो। लेकिन तब वह व्यक्ति चाहे जो हो जाए, पूर्णकालिक लेखक नहीं बन सकता। वह अधिक से अधिक अंशकालिक लेखक ही रहेगा।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है। यदि लेखक अपना पूरा समय और ऊर्जा लेखन को नहीं दे सकता, तो उसके काम की गुणवत्ता से हम क्या और कितनी अपेक्षा कर सकते हैं? हम विदेशी लेखकों की गहन शोध पर आधारित पुस्तकों की बहुत प्रशंसा करते हैं और अफसोस करते हैं कि हमारे यहाँ वैसा लेखन क्यों नहीं होता। लेकिन क्या हम यह भी सोचते हैं कि हमारे लेखकों को वैसी ही परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं या नहीं? क्या वे अपने लेखन की प्रामाणिकता के लिए दूर-दूर तक यात्राएँ कर सकते हैं? क्या वे किसी पुस्तक के लिए दो-तीन वर्ष तैयारी में लगा सकते हैं? क्या वे अपने शोध के लिए हजारों रुपये की किताबें खरीद सकते हैं? क्या वे शोध-सहायकों की टीम रख सकते हैं? क्या वे अपने लेखन को संपादित कराने के लिए पेशेवर संपादकों को भुगतान कर सकते हैं? क्या वे प्रकाशक से बातचीत के लिए साहित्यिक एजेंट नियुक्त कर सकते हैं? यदि इन सभी प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट रूप से 'नहीं' है, तो उनसे महान कृतियों की अपेक्षा करना कितना उचित है? प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद वे लिखते रहते हैं, क्या यह अपने आप में कम बड़ी बात है?

जब मैंने यह सब कहा तो उसने ऑस्ट्रेलिया की स्थिति के बारे में कुछ और जानकारी दी। वहाँ जो प्रकाशन अपने लेखकों को मानदेय नहीं देते या बहुत कम देते हैं, उन्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता। उन्हें खुले तौर पर लेखक की प्रतिभा का शोषण करने वाला माना जाता है। हाँ, वहाँ भी छोटे और बड़े प्रकाशनों में भुगतान की दरें अलग-अलग होती हैं। बहुत-सी ऑनलाइन सामग्री नि:शुल्क पढ़ी जा सकती है, लेकिन प्रिंट पत्रिकाएँ सामान्यत: खरीदकर ही पढ़ी जाती हैं। कुछ डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म प्रतिदिन सीमित संख्या में लेख नि:शुल्क पढ़ने देते हैं, उसके बाद उन्हें भुगतान करना पड़ता है। कथेतर लेखन और कथा साहित्य के लिए भी अलग-अलग व्यवस्थाएँ होती हैं। लेकिन कुल मिलाकर स्थिति यह है कि वहाँ बिना भुगतान के लिखना लगभग असामान्य माना जाता है।

जिस प्रकार मेरी पौत्री के लिए यह कल्पना से परे है कि कोई व्यक्ति जीवन भर बिना पैसे लिए लिखता रहे, उसी प्रकार हमारे लिए यह कल्पना करना कठिन है कि किसी लेखक को उसके लिखे हर शब्द के लिए भुगतान किया जाए। ये दो अलग-अलग व्यवस्थाएँ हैं।

प्रश्न यह है कि हमें कौन-सी व्यवस्था अधिक उचित लगती है?

क्या लिखना भी एक काम नहीं है? यदि है, तो उसके लिए भुगतान क्यों न हो? लेकिन यदि हम यह प्रश्न उठाते हैं तो एक और प्रश्न भी सामने आता है–क्या हम पाठक के रूप में पढ़ने के लिए पैसे खर्च करते हैं? क्या हम नियमित रूप से पुस्तकें और पत्रिकाएँ खरीदते हैं? क्या हमारे घरेलू बजट में इसके लिए कोई स्थान होता है? क्या हमारे घरों में पुस्तकों के लिए कोई कोना निर्धारित होता है? क्या हमारे यहाँ एक मजबूत सार्वजनिक पुस्तकालय व्यवस्था है? क्या नई बसने वाली कॉलोनियों में मंदिर, स्विमिंग पूल, टेनिस कोर्ट और जिम आदि के साथ-साथपुस्तकालय भी बनाए जाते हैं? क्या हमारे शैक्षणिक संस्थान नियमित रूप से नई पुस्तकें खरीदते हैं? क्या हम अपने बच्चों और विद्यार्थियों को अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं? क्या हमारे अखबार और पत्रिकाएँ नई पुस्तकों की नियमित चर्चा करते हैं?

इन प्रश्नों के उत्तर हम सब जानते हैं।

तो फिर लेखक को पैसा कहाँ से मिलेगा? और यदि लेखक को पैसा नहीं मिलेगा, तो वह कब तक केवल अपने जुनून के सहारे लिखता रहेगा?

क्या हम तेज़ी से एक पुस्तक-विहीन समाज की ओर बढ़ रहे हैं?

और पुस्तक-विहीन समाज अंतत: विचार-विहीन समाज बन जाता है–

एक ऐसा समाज जिसमें दृष्टि नहीं होती,

एक ऐसा समाज जिसमें सपने नहीं होते।

सोचिए।

गंभीरता से सोचिए।

और कुछ कीजिए-इससे पहले कि बहुत देर हो जाए।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

राजस्थान की उच्च शिक्षा में सेवा निरंतरता और वेतन संरक्षण : एक अनिवार्य नीतिगत सुधार

राजस्थान में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक गंभीर विसंगति देखने को मिल रही है

प्रो. अशोक कुमार

किसी भी राष्ट्र या राज्य की प्रगति उसकी उच्च शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। राजस्थान, जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर के साथ-साथ अब एक एजुकेशन हब के रूप में उभर रहा है, वहां उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक गंभीर विसंगति देखने को मिल रही है। यह विसंगति है-राजकीय महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के बीच शिक्षकों की गतिशीलता में आने वाली बाधाएं। वर्तमान में, राजस्थान लोक सेवा आयोग के माध्यम से नियुक्त उच्च योग्यता प्राप्त नेट, पीएचडी शिक्षक जब विश्वविद्यालयों में नियुक्त होते हैं, तो उन्हें अपने पिछले वर्षों के अनुभव और वेतन का लाभ नहीं मिलता। यह न केवल उन शिक्षकों के साथ अन्याय है, बल्कि राज्य की अकादमिक उत्कृष्टता के लिए भी एक बड़ा खतरा है।

राजस्थान के विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्तियां कई वर्षों तक लंबित रहती हैं। इस बीच, अत्यधिक सक्षम विद्वान, जो पीएचडी धारक हैं और नेट उत्तीर्ण हैं, अपना करियर शुरू करने के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में बैठते हैं और राजकीय महाविद्यालयों में सहायक आचार्यके रूप में कार्यभार ग्रहण कर लेते हैं।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब 5-10 वर्षों के अंतराल के बाद विश्वविद्यालयों में भर्ती प्रक्रिया शुरू होती है। ये अनुभवी शिक्षक, जो अब कॉलेज शिक्षा प्रणाली के अभिन्न अंग बन चुके हैं, अपनी शोध अभिरुचि के कारण विश्वविद्यालयों में आवेदन करते हैं। चयन होने पर, उन्हें एक नवागंतुक की तरह व्यवहार किया जाता है। उनकी पिछली सरकारी सेवा, उनके द्वारा पढाए गए वर्ष और उनका प्राप्त किया गया वेतन स्तर-सब कुछ शून्य मान लिया जाता है।

प्रमुख चुनौतियां और उनके प्रभाव

1. वेतन संरक्षण का अभाव

एक शिक्षक जिसने राजकीय कॉलेज में 8 साल सेवा दी है, वह सीनियर स्केल या सिलेक्शन ग्रेड पर होता है। विश्वविद्यालय ज्वाइन करते ही उसे पुन: शुरुआती मूल वेतन पर ला दिया जाता है। यह आर्थिक दंड जैसा है। परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच कोई भी विद्वान स्वेच्छा से अपनी सैलरी कम करवाकर शोध क्षेत्र में नहीं जाना चाहेगा।

2. करियर एडवांसमेंट स्कीम में बाधा

यूजीसी के नियमों के अनुसार, पदोन्नति के लिए पिछला अनुभव गिना जाना चाहिए। लेकिन प्रशासनिक पेचीदगियों के कारण, विश्वविद्यालयों में ज्वाइन करने के बाद शिक्षकों को अपनी सीनियरिटी खोनी पड़ती है। उनकी पिछली 10 साल की तपस्या को करियर प्रोग्रेशन में नहीं जोड़ा जाता, जिससे वे अपने साथियों से पिछड़ जाते हैं। जब सबसे सक्षम मस्तिष्क यह देखते हैं कि विश्वविद्यालय जाने पर उन्हें आर्थिक और पदोन्नति का नुकसान होगा, तो वे कॉलेजों में ही रुकना पसंद करते हैं। इससे विश्वविद्यालयों को वह अनुभवी वर्कफोर्स नहीं मिल पाता जो शोध और नवाचार को नई दिशा दे सके।

इस संकट को दूर करने के लिए राज्य सरकार और उच्च शिक्षा विभाग को एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा। निम्नलिखित सुधार इस दिशा में क्रांतिकारी सिद्ध हो सकते हैं:–

अंतर-संस्थागत सेवा निरंतरता

सरकार को एक स्पष्ट आदेश जारी करना चाहिए कि राजकीय महाविद्यालयों और राज्य के सार्वजनिक विश्वविद्यालयों के बीच सेवा को निरंतर माना जाएगा।

यूजीसी नियमों का कड़ाई से क्रियान्वयन: यूजीसी रेगुलेशन 2018 के क्लॉज 10.0 में स्पष्ट है कि यदि पिछले अनुभव की योग्यताएं वर्तमान पद के समान हैं, तो उसे गिना जाना चाहिए। राजस्थान को इसे बिना किसी स्थानीय अवरोध के लागू करना चाहिए।

अनुभव का सीधा लाभ: यदि कोई शिक्षक 7 साल के अनुभव के साथ आता है, तो विश्वविद्यालय में उसे सीधे अगले ग्रेड-पे या स्तर पर पदस्थापित किया जाना चाहिए।

वेतन संरक्षण के ठोस नियम

सरकारी कर्मचारी के एक विभाग से दूसरे विभाग में जाने पर अंतिम वेतन प्रमाण पत्र-को सुरक्षित रखना एक स्थापित प्रशासनिक सिद्धांत है। इसे शिक्षा विभाग में भी अनिवार्य रूप से लागू किया जाना चाहिए।

नोशनल फिक्सेशन: नियुक्ति के समय शिक्षक के पिछले इंक्रीमेंट्स को संरक्षित कर नया वेतन निर्धारित किया जाए। इससे शिक्षक को मानसिक शांति मिलेगी और वह पूर्ण ऊर्जा के साथ शोध कार्य कर सकेगा।

एकीकृत उच्च शिक्षा सेवा का गठन

राजस्थान को कॉलेज शिक्षा और विश्वविद्यालय शिक्षा के बीच की दीवार को गिराना होगा। एक यूनिफाइड कैडर या एकीकृत संवर्ग बनाने से शिक्षकों का स्थानांतरण या प्रतिनियुक्तिआसान होगी। इससे सीनियरिटी विवाद खत्म होंगे और एक साझा अंतिम वेतन प्रमाण पत्र, सेवा नियम पुस्तिका या सेवा नियमावली होने से वित्तीय लाभों में एकरूपता आएगी। विश्वविद्यालयों को अपनी भर्ती प्रक्रिया को राजस्थान लोक सेवा आयोग की तर्ज पर नियमित करना चाहिए।

अनुभव को प्राथमिकता: स्क्रीनिंग या इंटरव्यू प्रक्रिया में राजकीय कॉलेजों में पढा रहे शिक्षकों को उनके शिक्षक दिवस के आधार पर अतिरिक्त अंक मिलने चाहिए। यह उनके द्वारा समाज को दी गई सेवाओं का वास्तविक सम्मान होगा।

यदि इन सुझावों को लागू किया जाता है, तो इसके लाभ केवल शिक्षकों तक सीमित नहीं रहेंगे।

शोध की गुणवत्ता में सुधार: अनुभवी शिक्षक जब विश्वविद्यालयों में आएंगे, तो वे अपने साथ व्यावहारिक ज्ञान और शोध की परिपक्वता लाएंगे।

नैकरैंकिंग में सुधार: जब विश्वविद्यालयों में फैकल्टी की प्रोफाइल मजबूत होगी और भारत में छात्र-शिक्षक अनुपात सुधरेगा, तो प्रदेश के विश्वविद्यालयों की राष्ट्रीय रैंकिंग में भारी उछाल आएगा।

युवाओं को प्रेरणा: योग्य शिक्षकों को उचित सम्मान मिलने से नई पीढ़ी भी शोध और शिक्षा के क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित होगी।

निष्कर्ष– शिक्षक केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि समाज का मार्गदर्शक होता है। राजस्थान के संदर्भ में, राजकीय महाविद्यालयों के अनुभवी विद्वानों को विश्वविद्यालयों में एसेट मानकर उन्हें पूर्ण सेवा लाभ और वेतन संरक्षण देना समय की मांग है। यदि प्रशासनिक जड़ता के कारण इन विद्वानों का मार्ग रोका गया, तो हमारे विश्वविद्यालय केवल ईंट-पत्थर की इमारतें बनकर रह जाएंगे, जहाँ शोध और मौलिक चिंतन का अभाव होगा।

अत:, राज्य सरकार को अविलंब एक उच्च-स्तरीय समिति का गठन कर इन विसंगतियों को दूर करना चाहिए ताकि पधारो म्हारे देस की तर्ज पर हमारे विश्वविद्यालय भी प्रतिभाओं का सहर्ष स्वागत कर सकें।

–प्रोफेसर अशोक कुमार,
विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

परमाणु नगरी पोकरण में आस्था का अद्भुत केंद्र

गुरु बालीनाथजी का ऐतिहासिक धूणा : हजारों वर्ष पुरानी तपोस्थली पर हर वर्ष उमड़ती है लाखों श्रद्धालुओं की भीड़

जुगल किशोर बिस्सा

पश्चिमी राजस्थान की परमाणु नगरी पोकरण केवल अपने ऐतिहासिक और सामरिक महत्व के लिए ही नहीं, बल्कि शक्ति, भक्ति और आध्यात्मिक आस्था के केंद्र के रूप में भी जानी जाती है। यह तपोभूमि अनेक संतों की साधना और तपस्या की साक्षी रही है। मान्यता है कि यहां भगवान परशुराम, बालक नाथ जी, कबीर दास, साधुजी, डुगरपुरी जी, रामनाथ जी और सेवापुरी महाराज सहित कई संतों ने साधना कर मानव कल्याण का संदेश दिया।

इसी पावन धरती पर स्थित लोकदेवता बाबा रामदेव जी के गुरु बालीनाथ जी की तपोस्थली बालीनाथ जी का धूणा सदियों से श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। देश-विदेश से आने वाले बाबा रामदेव जी के लाखों भक्त हर वर्ष इस पवित्र स्थल पर पहुंचकर गुरु बालीनाथ जी के धूणे पर शीश नवाते हैं और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। आस्था, इतिहास और लोककथाओं से जुड़ा यह स्थान पश्चिमी राजस्थान की धार्मिक परंपरा का महत्वपूर्ण अध्याय माना जाता है।

गुरु-शिष्य परंपरा का पावन स्थल : लोक मान्यताओं के अनुसार संत बालीनाथ जी नाथ संप्रदाय के सिद्ध योगी और महान तपस्वी थे। उन्होंने पश्चिमी राजस्थान के कई स्थानों पर साधना की, जिनमें पोकरण क्षेत्र की यह तपोस्थली विशेष रूप से प्रसिद्ध हुई। कहा जाता है कि संत बालीनाथ जी ने यहां अपना धूणा स्थापित कर वर्षों तक कठोर तपस्या की। समय के साथ यह स्थान बालीनाथ जी का धुणा के नाम से विख्यात हो गया। जनश्रुति के अनुसार लोकदेवता बाबा रामदेव जी ने बाल्यकाल में यहीं अपने गुरु बालीनाथ जी से योग, साधना और धर्म का ज्ञान प्राप्त किया था। इस कारण यह स्थल गुरु-शिष्य परंपरा का अद्वितीय प्रतीक माना जाता है।

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धुणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट दूर होते हैं तथा मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

रामदेवरा यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव : पोकरण शहर के उत्तर दिशा पवित्र स्थल रामदेवरा से लगभग 12 किलोमीटर दूरी पर माना जाता है। रामदेवरा की यात्रा पर आने वाले लाखो भक्त पहले गुरु बालीनाथ जी के धुणा के दर्शन कर अपनी यात्रा का प्रारंभ करते हैं और उसके बाद बाबा रामदेव जी के मंदिर व डाली बाई के दर्शन कर यात्रा को पूर्ण मानते हैं। विशेष अवसरों, मेलों और धार्मिक आयोजनों के दौरान यहां श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ता है।

वर्तमान में भी जीवंत है आस्था : वर्तमान में बालीनाथ जी का धुणा साधु-संतों और श्रद्धालुओं के लिए एक पवित्र तपोस्थली के रूप में स्थापित है। यहां स्थित धूणा, प्राचीन बावड़ी और शिव मंदिर आसपास के धार्मिक स्थल श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं। धार्मिक अवसरों और मेलों के समय हजारों भक्त यहां पहुंचकर पूजा-अर्चना करते हैं और गुरु बालीनाथ जी की महिमा का गुणगान करते हैं।

संरक्षण और शोध की आवश्यकता : आज भी पोकरण और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में बालीनाथ जी का धुणा गुरु-भक्ति, लोकधर्म और आध्यात्मिक परंपरा का जीवंत प्रतीक बना हुआ है। सदियों पुरानी यह तपोस्थली क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान को संजोए हुए लाखों श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बनी हुई है।

हालांकि इस ऐतिहासिक स्थल पर लगे कई प्राचीन शिलालेख आज भी शोध की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आवश्यकता है कि देवस्थान विभाग, पर्यटन विभाग तथा पुरातत्व विभाग इस तपोस्थली की ऐतिहासिक धरोहर और शिलालेखों पर गहन शोध करें। इससे इस पवित्र स्थल से जुड़े अनेक ऐतिहासिक और आध्यात्मिक रहस्य उजागर हो सकते हैं तथा यह स्थान धार्मिक पर्यटन के रूप में भी नई पहचान प्राप्त कर सकता है।

–जुगल किशोर बिस्सा,
प्रेस रिपोर्टर।

बाइक पर बैठकर कलैक्टर ने मां कैला देवी मेले की व्यवस्थाएं देखी

जिला कलैक्टर नीलाभ सक्सेना ने फुटपाथ, भंडारा स्थल, चिकित्सा शिविर, प्याऊ आदि जगहों का अवलोकन किया और अधिकारियों को निर्देश दिये

करौली, (निसं)। उत्तर भारत के प्रसिद्ध शक्तिधाम कैला माता के चैत्र नवरात्र लक्खी मेले के शुभारंभ से पूर्व जिला कलैक्टर नीलाभ सक्सेना ने रविवार को करौली से कैला देवी मार्ग तक बाइक से भ्रमण कर मेले की व्यवस्थाओं का जमीन स्तर पर निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मार्ग में श्रद्धालुओं के लिए की गई तैयारियों का बारीकी से जायजा लेते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान कलैक्टर ने मार्ग पर बनाए गए फुटपाथ, भंडारा स्थल, चिकित्सा शिविर, प्याऊ, शौचालय तथा अन्य मूलभूत सुविधाओं का अवलोकन किया। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा सभी विभाग आपसी समन्वय के साथ व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित करें। कलेक्टर ने विशेष रूप से स्वच्छता, पेयजल, चिकित्सा एवं यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने पर जोर देते हुए संबंधित विभागों को सतर्क रहने के निर्देश दिए। उन्होंने मार्ग में लगाए गए भंडारों एवं टेंट व्यवस्थाओं की भी समीक्षा की तथा इन्हें सड़क से सुरक्षित दूरी पर लगाने के निर्देश दिए, ताकि श्रद्धालुओं की आवाजाही सुगम बनी रहे। इसके साथ ही पंचायतों द्वारा बनाए गए अस्थायी शौचालयों एवं अन्य सुविधाओं की भी जांच की। उल्लेखनीय है कि कैला माता का चैत्र नवरात्र लक्खी मेला 16 मार्च से प्रारंभ होगा, जिसमें प्रदेश सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों से बडी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है। जिला प्रशासन द्वारा मेले को लेकर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। निरीक्षण के दौरान मेला अधिकारी एवं करौली एसडीएम प्रेमराज मीणा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

- **अधिकारियों को निर्देश दिये कि मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो तथा सभी विभाग व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित करें**
- **कैला माता का चैत्र नवरात्र लक्खी मेला आज से, मेले में प्रदेश सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 16 मार्च, 2026

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, धनिष्ठा नक्षत्र मंगलवार प्रात: 6:22 तक, शिव योग प्रात: 9:37 तक, तैतिल करण प्रात: 9:41 तक, चन्द्रमा आज सायं 6:14 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

गृह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज सोम प्रदोष व्रत है। पंचक सायं 6:14 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:09 तक, शुभ 9:38 से 11:07 तक, चर 2:05 से 3:34 तक, लाभ-अमृत 3:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:40, सूर्यास्त 6:32

मेष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन/संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं।

कर्क

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेंगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ से राहत मिल सकती है।

तुला

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आर्थिक मामलों में परिजनों से सहयोग मिल सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मकर

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मीन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।